RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.060

भारत के सार्वजनिक क्षेत्रों में जारी विनिवेश नीति : एक अध्ययन

दीपक कुमार

एम० कॉम (वाणिज्य) नेट, यू० जी० सी०, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 September 2020

Keywords
अर्थव्यवस्था, कार्यशील जनशक्ति, खाद्यान्न, परिवहन, संचार।

ABSTRACT

भारतीय अर्थव्यवस्था मूलतः एक अल्प विकसित अर्थव्यवस्था है। वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था प्रगति की ओर बढ़ रही है। 21 वीं शताब्दी मेंदेश की अर्थव्यवस्था अन्य सेबेहतर स्थिति को प्रदर्शित करने हेतु प्रयत्नशील है। अर्थव्यवस्था में राष्ट्र के विकास का स्तर देखने के लिए बहुत से कारण एवं परिणाम है यथा– राष्ट्रीय आय, कार्यशील जनशक्ति, पूँजी निर्माण, बेरोजगारी, प्रति व्यक्ति आय, खाद्यान्न आदि।

भारत सार्वजनिक क्षेत्र का विकास करके सरकार अर्थव्यवस्था में आधारभूत सेवाओं जैसे परिवहन, यातायात, बैकिंग, विद्युत, संचार आदि सेवाएं उपलब्ध कराती है साथ ही उद्योग हेतु आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय स्त्रोत प्रदान करते हैं। औद्योगिकरण से उद्योगों की स्थापना की गयी तथापि कुछ क्षेत्रों में उद्योग विहिन होने के कारण क्षेत्रीय असंतुलन की स्थिति देखने को मिलती है। जैसे–जैसे देश में औद्योगिक क्रांति आती गयी, उसमें जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती गयी। यही कारण है कि तीव्र विकास के बावजूद जनसाधारण की गरीबी और बेरोजगारी पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ सका। अतः आज भी उनका जीवन स्तर असन्तोषजनक है।

भूमिका

21 वीं शताब्दी में भारतीय अर्थव्यवस्था प्रगति की ओर बढ़ रही है। आज के समय में देश की अर्थव्यवस्था अन्य से बेहतर स्थिति को प्रदर्शित करने हेतु प्रयत्नशील है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व मुख्यतः दो विचारधारा में दृष्टिगत होता है। एक राष्ट्र तो प्राकतिक संसाधनों को विदोहन कर अपना सामाजिक–आर्थिक स्तर में सन्तुलित विकास का उत्पादन के अतिरेक को विश्व के अन्य आवश्यकता वाले राष्ट्रों को प्रेषित कर धन एवं सेवाओं को अपनी अर्थव्यवस्था की ओर प्रवाहित कर रहे हैं, जबकि दूसरा राष्ट्र प्राकतिक संसाधनों का विदोहन नहीं कर सकता है या उनके पास ऐसे संसाधनों का अभाव है। वे राष्ट्र अपनी आवश्यकतानुसार अपनी अर्थव्यवस्था में उत्पादन करने में सक्षम नहीं है तथा मजबूरन उन्हें अन्य राष्ट्रों की ओर आशा की दृष्टि लिए देखना पड़ रहा है जिसमें उस राष्ट्र का अपेक्षित विकास न होकर उनकी पूँजी का प्रवाह अन्य राष्ट्रों की ओर हो रहा है।

अर्थव्यवस्था में राष्ट्र के विकास का स्तर देखने के लिए बहुत से कारण एवं परिणाम है यथा– राष्ट्रीय आय, कार्यशील जनशक्ति, पूँजी निर्माण, बेरोजगारी, प्रति व्यक्ति आय, खाद्यान्न आदि।

भारतीय अर्थव्यवस्था मूलतः एक अल्प विकसित अर्थव्यवस्था है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1951 से आयोजन के सहारे यह विकस कार्य में संलग्न है। अतीत काल की तुलना में भारतीय अर्थव्यवस्था में निःसंदेह विकास के मार्ग पर अग्रसर है। इस अग्रसर का मुख्य कारण औद्योगिकरण है। औद्योगिकरण से उद्योगों की स्थापना की गयी तथापि कुछ क्षेत्रों में उद्योग विहिन होने के कारण क्षेत्रीय असंतुलन की स्थिति देखने को मिलती है। जैसे–जैसे देश में औद्योगिक क्रांति आती गयी, उसमें जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती गयी। यही कारण है कि तीव्र विकास के बावजूद जनसाधारण की गरीबी और बेरोजगारी पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ सका। अतः आज भी उनका जीवन स्तर असन्तोषजनक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत में सार्वजनिक क्षेत्र किस दिशा में अग्रसर है, इसका पता लगाना।
2. भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के परिचलन में कठिनाईयाँ एवं दोषों का पता लगाना।
3. भारत के सार्वजनिक क्षेत्र में जारी विनिवेश नीति का वर्तमान स्वरूप पता लगाना।

परिकल्पना

किसी क्षेत्र का वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना पर निर्भर करता है, जिसके अन्तर्गत क्षेत्र को प्रभावित करने वाले तथ्यों का सार समाहित होता है। प्रस्तुत अध्ययन निम्नांकित परिकल्पना पर आधारित है। प्रस्तुत आलेख का निम्न परिकल्पना है–

1. भारत का सार्वजनिक क्षेत्र लाभ कमाने में सक्षम है।
2. भारत सरकार की नीतियाँ सार्वजनिक क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन विधि

अध्ययन की विधि विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक है। इस अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन सामग्री की प्राप्ति जिला सांख्यिकी कार्यालय, शोधग्रन्थों, संदर्भ ग्रन्थों एवं प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकों, आलेखों से की गई है तथा तथ्यों का विवेचन प्रामणिक ढंग से किया गया है।

भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के विकास का महत्व

सार्वजनिक क्षेत्र से आश्य एक ऐसी संस्था से है, जिसका स्थामित्व प्रबन्ध एवं नियंत्रण केन्द्र, राज्य, अथवा स्थानीय सरकार या किसी सार्वजनिक संस्था द्वारा किया जाता है। भारत के सर्वांगीण विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के महत्व निम्न है–

- सार्वजनिक क्षेत्र का विकास करके सरकार अर्थव्यवस्था में आधारभूत सेवाओं जैसे परिवहन, यातायात, बैकिंग, विद्युत, संचार आदि सेवाएं उपलब्ध कराती है।
- सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करके सरकार निजी क्षेत्र की एकाधिकारी एवं आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति को नियन्त्रित करती है।
- सार्वजनिक क्षेत्र सरकार द्वारा संचालित एवं नियन्त्रित होने के कारण जनहित एवं राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए अधिकतम सामाजिक कल्याण के सिद्धांत पर कार्य करते है।
- सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा अर्थव्यवस्था में आधारभूत एवं सामाजिक महत्व की सेवाओं एवं आवश्यक उद्योगों को विकसित किया जाता है।
- सार्वजनिक क्षेत्र उद्योग हेतु आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय स्त्रोत प्रदान करते है।
- सार्वजनिक क्षेत्र आर्थिक विकास की गति तीव्र करते हैं।
- सार्वजनिक क्षेत्र में उपक्रमों ने भारत के निर्यातों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे में भारतीय सार्वजनिक उपक्रमों भारत इलैक्ट्रानिक, स्टेड ट्रेडिंग कॉरपोरेशन खनिज एवं धातु व्यापार निगम, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स आदि है।

भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का उदय

भारत में सार्वजनिक क्षेत्र कुछ सीमा तक स्वतंत्रता से पहले भी विद्यमान थी किन्तु औपचारिक रूप से सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के विभाजन को मान्यता सर्वप्रथम 1948 में औद्योगिक नीति की घोषणा के अन्तर्गत प्रदान की गयी।

इस प्रकार भारतीय इतिहास में प्रथम बार इस नीति की घोषणा करके सरकारी तौर पर सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र की कार्य सीमाओं का निर्धारण किया गया। सन् 1956 में घोषित द्वितीय औद्योगिक नीति में कहा गया कि "भारत अपनी नीति का इस प्रकार निर्देशन करेगा जिससे राष्ट्र का अर्थव्यवस्था में जनता के हित के विपरीत सम्पत्ति एवं उत्पादन के साधनों के केन्द्रीयकरण न होने पाये।" स्पष्ट है कि ऐसे केन्द्रीकरण को अथवा उसकी सम्भावनाओं को रोकने के लिए देश में निजी क्षेत्र के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के अस्तित्व का महत्व भी बढ़ जाता है।

सार्वजनिक क्षेत्र में भारत सरकार की भूमिका

यह सर्वविदित है कि सार्वजनिक क्षेत्रों की स्थापना, संचालन, लाभ–हानि, अंकेक्षण आदि सभी कार्य भारत सरकार द्वारा ही सम्पन्न किये जाते हैं। भारत सरकार इन उद्योगों की प्रगति की समीक्षा करती है तथा सदन में इनकी रिपोर्ट रखती है। सरकारी उद्यमों की स्थापना सरकार द्वारा होती है।

सार्वजनिक क्षेत्रों के विस्तार का आधार 1956 का औद्योगिक नीति प्रस्ताव था। इस प्रस्ताव में सार्वजनिक क्षेत्रों को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। परिणामतः सार्वजनिक क्षेत्र का मुख्य कार्य भारी तथा मूल उद्योगों और आधार संरचना का विकास करना था। इसमें संदेह नहीं है कि सार्वजनिक क्षेत्र ने अर्थव्यवस्था का औद्योगिक आधार कायम किया है जिसके परिणामस्वरूप निजी क्षेत्र अन्य क्षेत्रों में विनियोग कर पाया है क्योंकि इसे सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा आधार संरचना सम्बन्धी सुविधाएँ उपलब्ध करायी गयी।

भारत सरकार ने जुलाई 1991 को नयी औद्योगिक नीतिकी घोषणा की जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र के सम्बन्ध में निम्नलिखित निर्णय लिए गये हैं–

- सार्वजनिक क्षेत्र के आधार संरचना हाईटैक और सामाजिक महत्व के उद्याोगों तक सीमित रखना।
- सार्वजनिक क्षेत्र के ऐसे उद्योग जो बीमार है उसे पुनः स्थापना के लिए औद्योगिक एवं वित्तीय बोर्ड का निर्माण करना।

सार्वजनिक क्षेत्र में वित्तीय संरचना

आजादी के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत वास्तव में सरकारी क्षेत्र या ही नहीं केवल उल्लेखनीय सरकार उद्यम थे। रेल, तार, डाक, पोर्ट ट्रस्ट युद्ध सामाग्री और विमान कारखाने और कुछ राजकीय प्रबन्ध वाले कारखाने, कुनीन बनाने का कारखाना इत्यादि। इसका मुख्य कारण यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत एक पिछड़ा एवं अल्पविकसित देश था जो मूलतः एक कृषि प्रधान था जिसका औद्योगिक आधार कमजोर था, जिसमें भारी बेरोजगारी विद्यमान थी तथा बचत एवं विनियोग का स्तर नीचा था और आधार संरचना सुविधाएं नाममात्र था।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तालिका संख्या–01

केन्द्र सरकार के उद्यमों में विनियोग की वृद्धि

वर्ष	इकाईयों की संख्या	कुल विनियोग करोड़(रूपये)
1951	5	29
1961	47	948
1980	179	18150
1990	244	97330
2001	242	274198
2002	240	324612
2018	348	1640628

स्रोत – सार्वजनिक उद्यम विभाग, भारत

इकाईयों की संख्या में वृद्धि

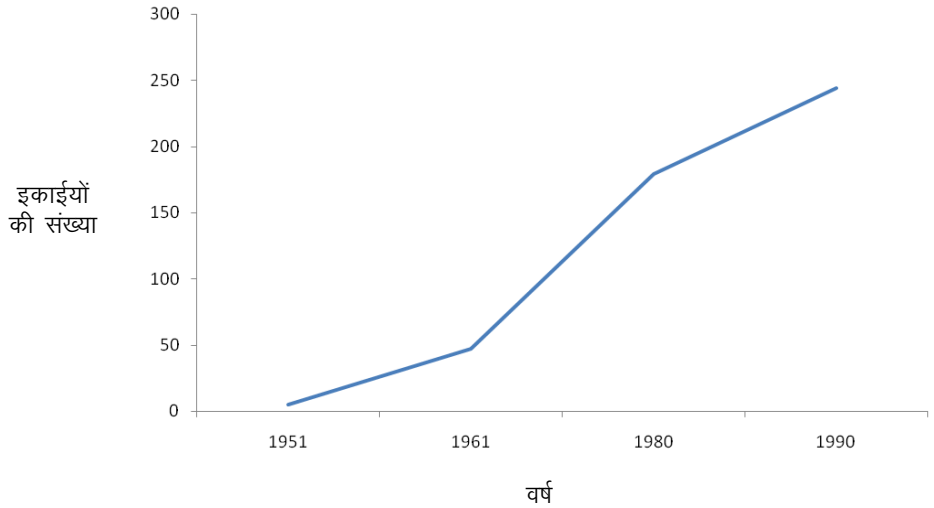

चित्र संख्या–01

केन्द्र सरकार के उद्यमों में विनियोग हेतु आंवटित राशि

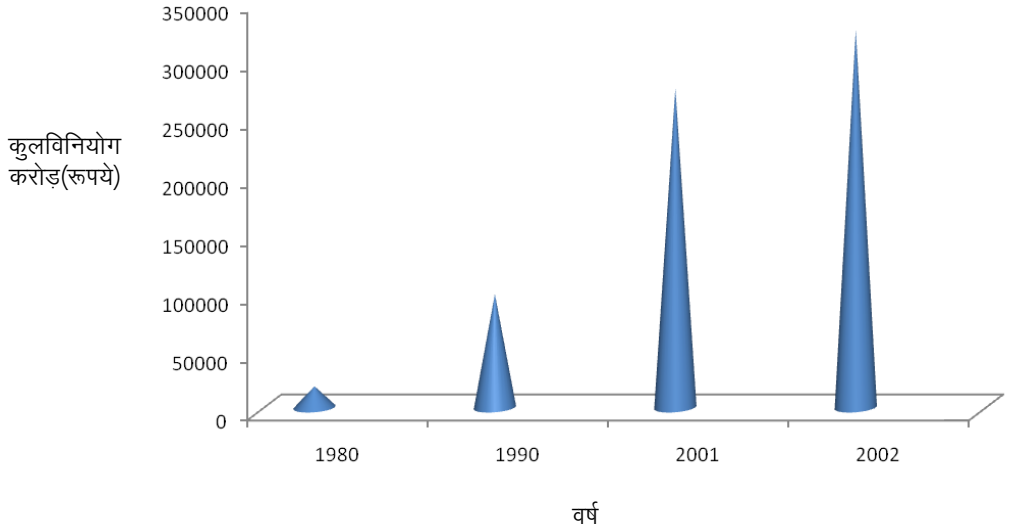

चित्र संख्या–02

तलिका संख्या–01 से स्पष्ट है कि देश में आजादी के बाद वर्ष 1951 से 1991 तक लगातार इकाईयों की संख्या बढ़ रही है, वही 1990 के बाद 2002 तक घटी है।

विनिवेश नीति का उद्देश्य

`विनिवेश´ शब्द का प्रयोग निजीकरण की प्रक्रिया के संकेत के लिए किया जाता है। विनिवेश मंत्रालय ने निम्नलिखित उद्देश्य बताए है–

1. गैर–सामरिक महत्व के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में बन्दी भारी राशि को मुक्त करना ताकि सामाजिक प्राथमिकताओं के आधार पर ऊँचा स्थान रखने वाली क्रियाओं अर्थात बुनियादी स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, प्राथमिक शिक्षा और सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में इसका प्रयोग किया जा सकें।
2. दुलर्भ सार्वजनिक संसाधनों का प्रयोग अक्षम गैर–सामरिक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में करने पर रोक लगाना।

विनिवेश नीति हेतु भारत सरकार द्वारा कार्य

व्यापार वैश्वीकरण, उदारीकरण की नीति भारत में 1 अप्रैल 2000 से पूर्णतः लागू हो चुकी है। अब भारत सरकार द्वारा केवल कुछ क्षेत्रों पर नियंत्रण रखती है। लगभग सभी उत्पादों से नियंत्रण हटा लिया गया है और सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियों को निजी क्षेत्र में देने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर डाली है। भारत सरकार द्वारा 1996 में विनिवेश आयोग का गठन किया गया है। जिसका मुख्य कार्य सार्वजनिक क्षेत्र में शेयर धारिता में कमी करने, बाजार अनुशासन कायम करने, संसाधन जुटाने, व्यापक जन सहभागिता प्रोत्साहन करना, अधिक से अधिक उत्तरदायित्व का संवर्धन करना तथा सरकारी उद्यमों के कार्य निष्पादन में सुधार करना तथा विश्वस्तरीय प्रवित्त के अनुसार करना है।

कठिनाईयाँ एवं दोष

दूसरी पंचवर्षीय योजना में उल्लेख किया है कि सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार तेजी से करना है। इसे न केवल उन क्षेत्रों में जिनमें निजी क्षेत्र विनियोग करने के लिए अनिच्छुक है, अपितु इसे अर्थव्यवस्था के समग्र विनियोग ढांचे को परिवर्तन के लिए मुख्य भूमिका अदा करनी होगी, भले ही इसके लिए इसे प्रत्यक्ष विनियोग करना पड़े या यह विनियोग निजी क्षेत्र द्वारा किया जाता है। निजी क्षेत्र को समाज द्वारा स्वीकृत व्यापक योजना के दायरे में ही अपना कार्य करना होगा।

देश में सरकारी उद्यमों की क्षमता और कार्य पद्धति को सुधारने की काफी गुंजाईश है। लेकिन इस क्षेत्र की कठिनाईयाँ एवं दोष निम्न है–

- सार्वजनिक क्षेत्र में बढ़ती हुई हानियाँ।
- सरकारी उपकर्मो में अधिपूँजीयन की स्थिति विद्यमान है।
- स्थापना स्थान की अनुपयुक्तता।
- सरकारी उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ाती जा रही है।
- पूर्ति में अधिक समय लगाना।
- कच्ची सामग्री का अपव्यय।
- आवश्यकता से अधिक मानव शक्ति प्रयोग।
- श्रम अनुशासनहीनता।
- विनिवेश की प्रक्रिया पर मतभेद।
- अकुशल प्रबन्ध।
- दोष पूर्ण नियंत्रण।

निष्कर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था में सरकारी उद्यम स्थापना के समय आर्थिक मन्दिर का रूप लिए हुए थे जिनमें आज भी कुछ अपनी प्राकाष्ठा को प्रदर्शित करते हैं, परंतु कुछ अपनी प्रतिष्ठा खो चुके हैं। सरकारी उपक्रम न केवल सस्ता उत्पाद के लिए प्रस्तुत करता है। सरकारी क्षेत्र ने कपड़ा, चीनी, जूट, उर्वरक आदि जैसे उत्पादक उद्योगों की ही सेवा उपलब्ध नहीं कराई अपितु होटल, बैकिंग एवं वित्तीय संस्थान, परिवहन आदि अनेकों प्रकार की सेवाएं भी उपलब्ध कराई है।

संदर्भ सूची

[1]. औद्योगिक नीति प्रस्ताव– प्रथम औद्योगिक नीति 1948, भारत सरकार
[2]. औद्योगिक नीति प्रस्ताव– द्वितीय औद्योगिक नीति 1956, भारत सरकार
[3]. कुमार, मोहित (2005) : भारत के सार्वजनिक उपक्रमों में विनियोग नीति का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पी –एच० डी० शोध प्रबंध, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
[4]. योजना, 2009
[5]. योजना, 2015

RRIJM 2015, All Rights Reserved